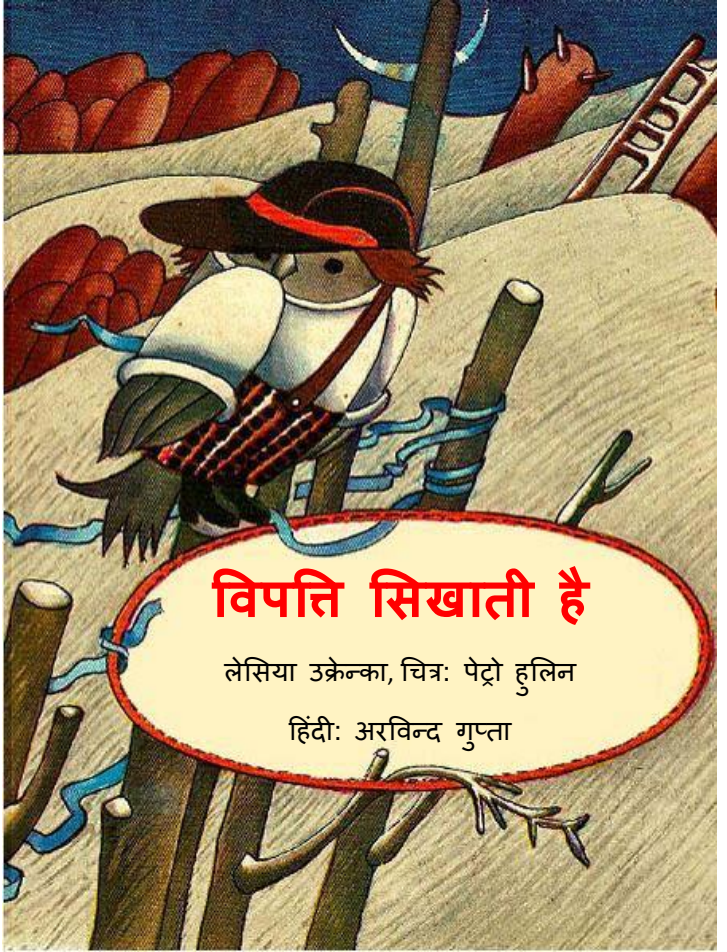

विपत्ति सिखाती है

लेसिया उक्रेन्का, चित्र: पेट्रो हुलिन

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

एक बार की बात है एक गौरइया थी. वो एक काफ़ी अच्छी गौरइया होती, सिवाय इसके कि, दुर्भाग्य से, वो मूर्ख थी. जब से वो अपने अंडे से बाहर निकली थी तब से उसने कुछ भी नहीं सीखा था. वह किसी भी चीज़ में सक्षम नहीं थी: न तो घोंसला बनाने में, न ही खाने के लिए स्वादिष्ट अनाज ढूंढने में; वह जहां बैठती थी, वहीं सो जाती थी; जो कुछ उसकी आंखों के सामने आता, वो खा लेती थी. हालाँकि, उसमें एक अच्छी बात यह थी कि वह बहुत उत्साही थी - किसी भी कारण से, या बिना किसी कारण के, वो हमेशा लड़ने को तैयार रहती थी.

एक दिन वह अपनी एक दोस्त, एक युवा गौरइया के साथ एक घर के आँगन में उड़ रही थी. वे कूड़े के ढेर के चारों ओर खेलते हुए इधर-उधर उड़ रहीं थीं, तभी उन्हें बीज के तीन दाने मिले. और फिर हमारी गौरइया ने कहा:

"वे मेरे बीज हैं, मैंने उन्हें पाया है!"

लेकिन दूसरे ने भी चिल्लाकर कहा:

"नहीं, वे मेरे हैं! मेरे! मेरे!"

और फिर वे लड़ने लगीं. वे ऊपर-नीचे उछल-कूद करते हुए और एक-दूसरे को इतनी जोर से नोंचते हुए लड़ीं कि उनके पंख उड़ गए. वे तब तक लड़ती रहीं जब तक वे दोनों थक नहीं गईं फिर वे एक-दूसरे के सामने बैठ गईं. उनके पंख फूले हुए थे और भूल गईं थीं कि वे किस बारे में लड़ रही थीं. अचानक याद आने पर वे बीज ढूंढने लगीं. उनके बीज कहाँ हो सकते थे?

एक मुर्गी, अपने बच्चों के साथ, आँगन में घूम रही थी और कुड़कुड़ा रही थी:

"जहाँ मूर्ख लड़ते हैं, बुद्धिमान लाभान्वित होते हैं; जहाँ मूर्ख लड़ते हैं, बुद्धिमान लाभान्वित होते हैं!"

"तुम क्या कह रही हो?" गौरईयों ने मुर्गी से पूछा.

"देखो, मैं तुम्हें इतना मूर्ख होने के लिए धन्यवाद दे रही थी! जब तुम इतनी मूर्खता से लड़ रही थीं, तब मैंने उन बीजों को अपने बच्चों को खिला दिया. मूर्ख व्यक्ति के बारे में क्या कहूं? बचपन में तुम्हें कोई सिखाने वाला नहीं रहा होगा! अगर कोई तुम्हें समझाता तो शायद तुम बड़े होकर अकलमंद पक्षी बनते!.."

इन शब्दों पर दूसरी गौरइया गुस्सा हो गई. उसने मुर्गी से कहा:

"तुम अपनी समझ अपने बच्चों को ही सिखाओ. जहां तक मेरी बात है तो मेरे पास पहले से ही काफी कुछ अकल है!" वह गुस्से से चिल्लाई, उछली, पंख हिलाए और उड़ गई. लेकिन हमारी गौरइया वहीं रह गई और सोचने लगी.

"यह सच है," उसने सोचा, "समझदार होना बेहतर है. मुर्गी बड़ी समझदार थी, क्योंकि वो मेरा खाना खा गई और मैं यहाँ भूखा बैठी हूँ."

उसने कुछ और सोचा, फिर वो मुर्गी की ओर मुड़ी और उसने विनती की:

"मुझे समझदार बनना सिखाओ, मुर्गी बहिन! तुम खुद इतनी बुद्धिमान हो!"

"अरे नहीं!" मुर्गी ने उत्तर दिया. "माफ़ करो प्रिय, लेकिन मेरे पास पहले ही काफी परेशानियां और काम हैं. ज़रा मेरे बड़े परिवार को देखो, मुझे उन्हें भी कुछ ज्ञान सिखाना होगा! तुम किसी अन्य शिक्षक की तलाश करो!" और फिर वो मुर्गीघर में चली गई.

गौरइया अकेली रह गई.

"क्या करूं? अब मुझे ज़रूर किसी से मदद मांगनी होगी, क्योंकि ज्ञान के बिना मैं नहीं जीना चाहती!" और फिर वह उड़कर जंगल की ओर चली गई.

जंगल में पहुँचकर, उसे सबसे पहले एक कोयल मिली, जो एक पेड़ पर बैठी थी और गा रही थी: "कू-कू! कू-कू!"

गौरइया सीधे उसके पास गई.

"आंटी, मेरा आपसे एक अनुरोध है. आप मुझे बुद्धिमान बनना सिखाएं! देखिए, आपकी अपनी कोई संतान नहीं है. मैंने मुर्गी से पूछा था, लेकिन वो पहले ही काफी व्यस्त थी."

"खैर, मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूँ!" कोयल ने उत्तर दिया. "अगर मेरी खुद की कोई परेशानी नहीं है, तो फिर मैं किसी और की परेशानी भला क्यों मोल लूं? क्या मेरे पास अजनबी बच्चों को ज्ञान सिखाने से बेहतर कोई काम नहीं है? लेकिन अगर तुम यह जानना चाहती हो कि कैसे तुम कितने वर्ष जीवित रहोगी, तो वो मैं तुम्हें बता सकती हूँ."

"जब तक आप ज़िंदा हैं, तब तक आप मेरी चिंता न करें!" गौरइया ने जवाब दिया और फिर वो उड़ गई.

वह तब तक उड़ती रही जब तक कि वह एक दलदल तक नहीं पहुंच गई. वहां उसने पेलिकन पक्षी को देखा जो मेंढकों को पकड़ने में व्यस्त था. गौरइया नीचे उड़ी और फिर डरते-डरते उसके पास गई:

"मिस्टर पेलिकन, आप बहुत बुद्धिमान हैं...कृपा मुझे समझदार होना सिखाएं."

"क्या क्या क्या?" पेलिकन चिल्लाया. "यहाँ से दूर हो जाओ! तुम जैसे लोगों का मेरे लिए कोई उपयोग नहीं है!.."

गौरइया तेजी से फुसफुसाकर दूर चली गई, डर के कारण मुश्किल से ही वो सांस ले पा रही थी.

नीचे देखने पर उसकी नजर एक जुते हुए खेत में उदास बैठे कौवे पर पड़ी.

"अंकल," उसने उसके पास पहुँचते हुए पूछा, "आप इतने चिंतित क्यों हैं?"

"मैं नहीं जानता, बेटी, मैं बिल्कुल नहीं जानता!"

"क्या अंकल, आप मुझे बुद्धिमान बनना सिखा सकते हैं?"

"नहीं बेटी, वो मैं नहीं कर सकता. मैं खुद बहुत समझदार नहीं हूं, इसलिए मैं किसी और को वो कैसे सिखा सकता हूं? लेकिन अगर तुम सच में सीखना चाहती हो, तो तुम उल्लू के पास क्यों नहीं जातीं? देखो, सब लोग कहते हैं कि उल्लू बहुत समझदार, बेहद बुद्धिमान है. और वह तुम्हें सिखाने में जरूर सक्षम होगा. मैं स्वयं बहुत अधिक बुद्धिमान नहीं हूं. देखो, भगवान ही मेरी मदद कर सकते हैं!"

"अलविदा अंकल!" गौरइया ने कहा.

"तुम्हें कामयाबी मिले!"

गौरइया काफी दूर तक उड़ती रही. वो हर किसी से पूछती रही कि उल्लू कहाँ रहता था. उसे बताया गया कि वह सूखे बांझ के पेड़ के खोखले तने में रहता था. गौरइया वहां गई, और निश्चित रूप से, उल्लू वहाँ खोखले में बैठा था, और गहरी नींद में सोया था. गौरइया एक शाखा पर बैठ गई:

"अंकल! क्या आप सो रहे हैं? अंकल! अंकल उल्लू!"

उल्लू तेजी से अपने पंख फड़फड़ाते हुए कूदा:

"हूं! क्या? कौन है?" वह चिल्लाया, उसकी आँखें उभरी हुई थीं.

गौरइया खुद थोड़ा डरी हुई थी, लेकिन वह एक दृढ़ निश्चयी छोटी चिड़िया थी.

"वो मैं हूं, गौरइया..." उसने कहा.

"गौरइया? कौन गौरइया? अभी मैं कुछ नहीं देख सकता हूं! तुम क्या चाहती हो? दिन में कौन सी बुरी हवा तुम्हें यहाँ लाई है? तुम क्यों शोर मचा रही हो! तुम लोग मुझे दिन में सोने भी नहीं देते हैं..."

और उल्लू तुरंत फिर से सो गया. गौरइया की उसे दोबारा जगाने की हिम्मत नहीं हुई, इसलिए वह पेड़ पर बैठ गया और रात होने का इंतजार करने लगा. उसने तब तक इंतजार किया जब तक वह थक नहीं गया और उस सब से ऊब नहीं गया. हालाँकि, जब अंधेरा होने लगा, तो उल्लू जाग गया और फिर वो अचानक चिल्लाया: "हू-ऊ-ऊ!.. हू-हू-हू-ऊ-ऊ..." गौरइया भय से स्तब्ध हो गई: वह उड़ना चाहती थी, लेकिन किसी तरह वो वहीं रुकी रही. उल्लू खोखले से बाहर आया, उसने गौरइया को ऐसी चमकदार बड़ी-बड़ी आँखों से देखा कि गौरइया फिर से डर गई.

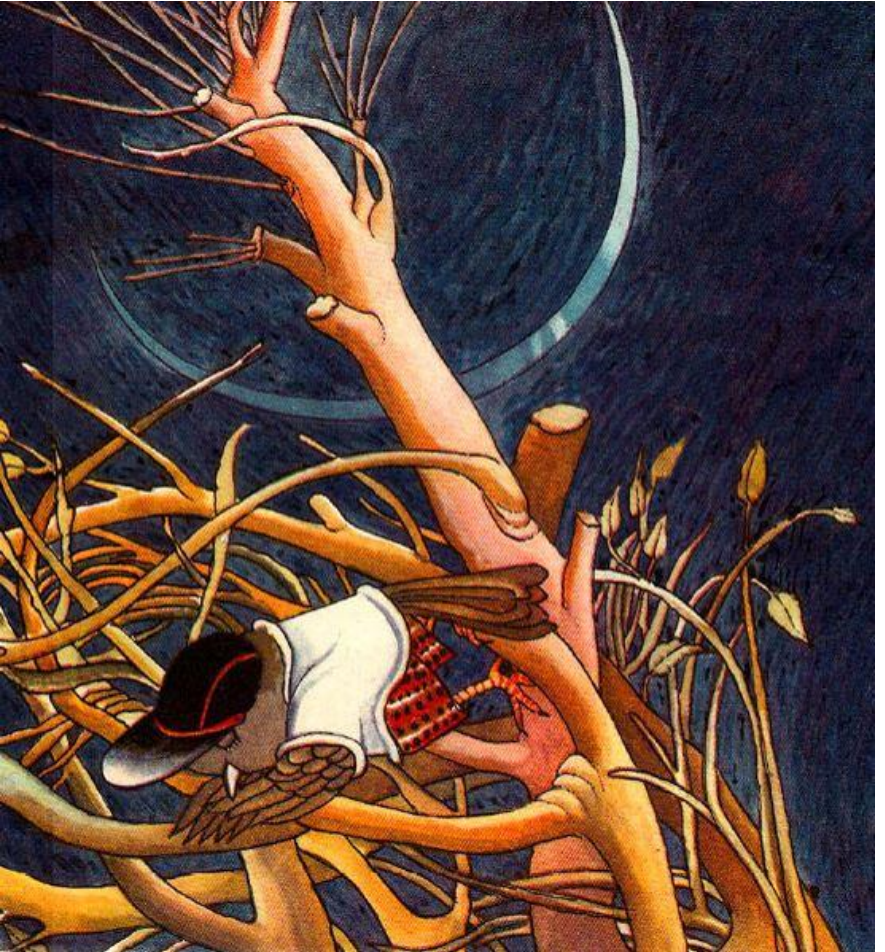

"तुम यहां पर क्या कर रही हो?" उल्लू चिल्लाया.

"मैं आपसे माफ़ी मांग रही हूं, सर. मैं सुबह से आपका यहाँ पर इंतज़ार कर रही हूँ..."

"किसलिए?"

"आपके जागने के लिए..."

"अच्छा, अब मैं तैयार हूँ! तुम क्या चाहती हो? बोलो!"

"मैं आपसे पूछना चाहती थी सर, क्या आप इतने दयालु होंगे कि मुझे बुद्धिमानी के कुछ सबक सिखा सकें? क्योंकि आप खुद बहुत बुद्धिमान हैं..."

"देखो, जो मूर्ख पैदा होता है, वह मूर्ख ही मरता है! अब यहाँ से भागो, क्योंकि मैं बहुत भूखा हूँ!" उल्लू चिल्लाया, और फिर से उसकी बड़ी-बड़ी आँखें एक भयावह तरीके से चमक उठीं.

गौरइया तेजी से उड़ गई, उसने सोचा कि वह खुद किसी झाड़ी में जाकर छिप जाएगी.

वहां पर गौरइया ने रात बिताई. वह गहरी नींद में सो रही थी कि जब उसने अपने सिर के ऊपर जोर से "चीर-र-र-र" की आवाज सुनी तो वह चौंककर जाग गई. ऊपर देखने पर उसने देखा कि एक सफेद पंखों वाला मैगपाई उसके ऊपर वाली एक गांठदार शाखा पर बैठी थी, और इतनी एकाग्रता से चिल्ला रही थी कि उसकी आँखें बंद हो गई थीं.

"आप किससे बात कर रही हैं, मिस?" गौरइया ने पूछा.

"तुम्हें उससे क्या लेना-देना है? ऐसी जिज्ञासा क्यों?"

"शायद मैं आपसे बात कर रही हूँ!"

"ठीक है, अगर यह मेरे लिए है तो मैं बहुत खुश हूं, मिस, मैं आपसे विनती करती हूं कि आप मुझे ज्ञान का पाठ पढ़ाएं."

"अब मुझे बताओ कि तुम्हें ज्ञान की आवश्यकता क्यों है? इस दुनिया में बिना सोचे-समझे जीना काफी आसान है, और तब जीवन निश्चित रूप से अधिक खुशहाल होता है. अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं चोरी करना जल्द ही सीख जाता, जो मैं अब करता हूँ, और उसके लिए तुम्हें किसी ज्ञान की आवश्यकता नहीं है. तुम बस मेरी बात सुनो! मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि ज्ञान के बिना तुम कैसे जी सकती हो..." मैगपाई ने यह सलाह दी और फिर अधिक जोर और तेजी से चिल्लाना शुरू किया.

"लगता है तुम एक मूर्ख और बातूनी पक्षी हो!" गौरइया चहकी. "तुमने अपनी बकबक से मुझे बहरा कर दिया है! दूर हो जाओ!" और फिर गौरइया वहां से तेजी से उड़ गई.

एक खेत में बैठकर, गौरइया सोचने के लिए रुकी. "मैं बुद्धिमान होना किससे सीख सकती हूं? मैं काफी समय से इधर-उधर उड़ रही हूं फिर भी मैं कुछ भी सीख नहीं पा रही हूं. शायद ऐसा ही होगा?" और फिर वह वहीं बैठ गई, चिंतित, उदास होकर मैदान की ओर देखने लगी, जहां एक नर कौवा अपनी गरिमापूर्ण शैली में घूम रहा था.

"मैं तुरंत जाकर उससे पूछूंगी," गौरइया चहक उठी. "लेकिन वह अंतिम प्राणी होगा."

"मुझे बुद्धिमान बनना सिखाओ," उसने सीधे जाकर नर कौवा से पूछा. "मैं लंबे समय से ज्ञान की तलाश कर रही हूं, लेकिन मुझे वह मिल नहीं रहा है."

"अकल, मेरी युवा मित्र, सड़क के किनारे नहीं पड़ी होती है," नर कौवा ने बड़ी गरिमा के साथ उत्तर दिया. "अकल को हासिल करना इतना आसान नहीं है. लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताऊंगा: यदि तुमने कभी कठिन परिस्थितियों का अनुभव नहीं किया हो तो फिर तुम कभी भी बुद्धिमान नहीं बन पाओगी. उसके बारे में गंभीरता से सोचो. अब अपने रास्ते जाओ, क्योंकि मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है."

गौरइया उड़ गई. "वह किस तरह की सलाह थी?" उसने सोचा. अब गौरइया पहले से भी ज्यादा दुखी थी. लेकिन उसके बाद उसने किसी और से उसे सिखाने को नहीं कहा. पहले ही बहुत लोग उसे नसीहत दे चुके थे. उसने ज्ञान के बिना जीने के बारे में कुछ सोचा, और फिर वो उसके बारे में भूल गई. वह फिर बिना कुछ सोचे-समझे मजे से इधर-उधर उछलने-कूदने लगी.

समय इतनी तेजी से बीत गया कि इससे पहले कि गौरइया को पता चलता, गर्मियों का मौसम निकल गया. शरद ऋतु अपनी ठंडी हवाओं, चुभने वाली बारिश और बर्फ की बौछारों के साथ आई. अब गौरइया सचमुच मुसीबत में थी. वो अब भूख और ठंड का सामना कर रही थी! रात को वह जहां भी रहती ठंड के मारे सो नहीं पाती थी. हवा इतनी ठंडी थी कि वह कांपती थी. दिन में खाने को भी कुछ नहीं मिलता था, क्योंकि सब अनाज सर्दियों के लिए भण्डारों में छिपाकर रख दिया गया था, और जब उसे कुछ मिलता था तो वो झगड़ों के कारण उसे खो देती थी.

और यहीं से हमारी गौरइया को ज्ञान प्राप्त होना शुरू हुआ. उसने निर्णय लिया कि उसे झगड़ा करना बंद कर देना होगा. जहाँ भी उसके गौरइया मित्र उड़ते, वह भी उनके साथ-साथ उड़ती; जो कुछ उन्हें खाने को मिलता उसे भी उसका एक हिस्सा मिलता था. जब उसने लड़ना-झगड़ना बंद कर दिया तो बाकी गौरईयों ने उसे स्वीकार कर लिया, जबकि पहले तो वे उसे अपने पास तक नहीं फटकने देती थीं.

गौरइया ने देखा कि अन्य पक्षी अपने घोंसलों में कैसे गर्म रहते थे जो उन्होंने सर्दियां आने से पहले खुद बनाए थे. इसलिए उसने ध्यान से देखा कि घोंसले कैसे बनाए जाते थे. उसने एक के बाद एक पंख, तिनके इकट्ठा करना शुरू किए, और फिर अपने लिए एक घोंसला बनाया. उसने कोशिश की और इतनी मेहनत की कि बाकी पक्षी उसका सम्मान करने लगे. जब भी वे किसी बैठक में मिलते थे, तब गौरइया बुलाया जाता था और उसके विचारों को बड़े ध्यान से सुना जाता था. वह सर्दियों में सफलतापूर्वक जीवित रही, और वसंत तक वह एक बुद्धिमान और समझदार गौरइया बन गई. वह अब अकेले अपने घोंसले में नहीं बैठती थी, अब उसका एक साथी था, और उसके घोंसले में चार छोटे अंडे थे. जल्द ही वह एक परिवार का पालन-पोषण करने लगी और उस पर अधिक ज़िम्मेदारियाँ आ गई - गौरइया को अपने बच्चों को खाना खिलाना था, उड़ना सिखाना था और दुश्मनों से उन्हें बचाना था. वो फज़ूल में समय बर्बाद नहीं करती थी. उसके पड़ोसी उसकी अच्छी समझ और बुद्धिमानी से फूले नहीं समाते थे और अक्सर उससे सलाह मांगने आते थे:

"गौरइया, तुम इतनी चतुर और बुद्धिमान कैसे बनीं, तुमने यह सब कहाँ से सीखा?"

और पूछे जाने पर गौरइया केवल सिर हिलाती थी. "कठिन परिस्थितियां सब कुछ सिखाती हैं!" वह उनसे कहती थी.